INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2018 Special Issue – LXIII

हिंदी और रोजगार

अतिथि संपादक
डॉ. अपर्णा कुचेकर
विभागाध्यक्ष, स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज
तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

विशेषांक कार्यकारी संपादक
प्रा. निवृत्ति लोखंडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज
तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला
तह.- येवला, जिला- नासिक

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC) List No.
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 63 : हिंदी और रोजगार
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

Impact Factor – 6.261 **ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2018 Special Issue – LXIII

हिंदी और रोजगार

अतिथि संपादक
डॉ. अपर्णा कुचेकर
विभागाध्यक्ष, स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज
तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

विशेषांक कार्यकारी संपादक
प्रा. निवृत्ति लोखंडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज
तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला
तह.- येवला, जिला- नासिक

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 500/-

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 63 : हिंदी और रोजगार
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.क्र.
1	हिंदी और रोजगार	डॉ.मिथिलेश अवस्थी	06
2	फिल्म जगत और रोजगार	डॉ.सुरैय्या शेख	11
3	हिंदी निवेदक : एक रोजगार	डॉ. अपर्णा कुचेकर	14
4	हिंदी और रोजगार कि संभवनाएँ	डॉ.पंडित बन्ने	18
5	हिंदी भाषा में रोजगार और संभवनाएँ	डॉ. संघ प्रकाश दुड्डे	21
6	हिंदी और रोजगार के अवसर	डॉ. वर्षा गायकवाड	25
7	हिंदी सिनेमा में रोजगार के अवसर	डॉ. चित्रा गोस्वामी	28
8	नया जमाना – नए रोजगार इंटरनेट	प्रा. निवृत्ति लोखंडे	31
9	हिंदी पत्रकारिता एवं रोजगार	डॉ. संजय मुजमुले	35
10	पटकथा लेखन में रोजगार के अवसर	डॉ. नवनाथ गाडेकर	39
11	रोजगारोन्मुखी हिंदी का वर्तमान परिदृश्य	डॉ.दीपक तुपे	41
12	हिंदी और रोजगार के अवसर	डॉ.शहनाज सय्यद	44
13	रोजगार की दृष्टी से हिंदी की उपयोगिता	डॉ.मिलिंद साळवे	48
14	रोजगार के परीप्रेक्ष्य में अनुवाद का क्षेत्र	डॉ.गंगाधर बिराजदार	53
15	हिंदी और रोजगार के अवसर	डॉ. सरोज पाटील	56
16	हिंदी पत्रकारिता एवं रोजगार के अवसर	डॉ.शेख मोहम्मद शाकीर	60
17	प्रिंट मिडिया में रोजगार के अवसर	डॉ.विनायक बापू कुरणे	63
18	संवाददाता : समीक्षा तथा साक्षात्कार के माध्यम से रोजगार की संभवनाएँ	डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे	66
19	हिंदी के क्षेत्र में रोजगार की संभवनाएँ	प्रा. सिद्धाराम पाटील	71
20	हिंदी और रोजगार के अवसर	प्रा. विश्वनाथ पटेकर	75
21	हिंदी और रोजगार के अवसर	डॉ.सत्यनारायण एच.के.	78
22	पत्रकारिता में संपादकीय योग्यताएँ एवं रोजगार कें अवसर	प्रा.अशोक घोरपडे	81
23	हिंदी और रोजगार के अवसर	रेखा श्रीवास्तव	85
24	हिंदी और रोजगार की संभवनाएँ	प्रा.मालोजी जगताप	88
25	हिंदी और रोजगार के अवसर	प्रा.रईसा मिर्झा	93

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 63 : हिंदी और रोजगार
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
October-2018

रोजगारोन्मुखी हिंदी का वर्तमान परिदृश्य

डॉ. दीपक तुपे,
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, (स्वायत्त)
कोल्हापुर.४१६ ००३.
मोबाइल: ८८०५२८२६१०
ई–मेल: dipaktupe1980@gmail.com

भाषा का साहित्यिक पक्ष जितना महत्त्वपूर्ण होता उतना प्रयोजनमूलक भी। 'प्रयोजन' का अर्थ उद्देश्य है और 'मूलक' का अर्थ है–आधारित। प्रयोजनमूलक भाषा का अर्थ है–विशिष्ट उद्देश्य पर आधरित भाषा। प्रयोजनमूलक हिंदी से तात्पर्य ऐसी विशिष्ट भाषा से है जिस भाषा का कोई विशिष्ट प्रयोजन या उद्देश्य होता है। यही विशिष्ट उद्देश्य भाषा के तमाम रोजगारपरक अवसरों को मुहैया कराता है। आज हिंदी अध्येताओं के लिए प्रिंट माध्यम, दक्–श्राव्य माध्यम, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, दूरसंचार माध्यम, वेब माध्यमों के साथ–साथ विज्ञापन, अनुवाद, साहित्य लेखन, शिक्षा संस्थान, राष्ट्रीयकृत बैंक, केंद्रीय कार्यालय, विभिन्न निगमों, राष्ट्रीय उद्योग एवं व्यापार जैसे क्षेत्रों में रोजगार के तमाम अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

मुद्रित माध्यम :

आज प्रिंट मीडिया में रोजगार के कई अवसर हैं। प्रतिदिन नए–नए अखबार लॉन्च हो रहे हैं और उनके ऑनलाइन संस्करण भी शुरू किए गए हैं; जैसे–'प्रभात खबर', 'राजस्थान पत्रिका', 'दैनिक भास्कर', 'नवभारत टाइम्स', 'लोकमत समाचार', 'नई दुनिया', 'पंजाब केसरी', 'दैनिक छत्तीसगढ़', 'दैनिक नवज्योति', 'हिंदुस्तान', 'जागरण', 'आज', 'अमर उजाला' और 'बीबीसी' आदि। इन अखबारों ने आज प्रिंट के साथ ऑनलाइन समाचार प्रकाशित कर अंतर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण किया है। इन समाचार पत्रों में वार्ता संकलक, संवाददाता, सहायक उपसंपादक, उपसंपादक, वरिष्ठ उपसंपादक, समाचार संपादक, निवासी संपादक, कार्यकारी संपादक, संपादक, प्रधान संपादक आदि रोजगार के पद उपलब्ध हो रहे हैं। इसके अलावा मुद्रित शोधक, पेज मेकर जैसे कई पद उपलब्ध होते हैं। साथ ही पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्द्ध–वार्षिकी, वार्षिकी, द्वै–वार्षिक, त्रै–वार्षिक जैसे समय के अनुसार निकलने वाले प्रिंट माध्यमों में विभिन्न पद एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम:

इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रोडियो, दूरदर्शन, चैनल आदि आते हैं। आज दूरदर्शन तथा विविध चैनलों के लिए विभिन्न हिंदी धारावाहिक के लिए पटकथा, गीत, संवाद लेखन, चैनल पर प्रसारित विभिन्न कार्यक्रमों का संहिता लेखन के लिए हिंदी भाषा के अध्येताओं की नितांत आवश्यकता होती है। साथ ही दूरदर्शन तथा चैनलों के लिए पटकथा लेखक, दृश्य संकलक, छायाचित्रण, प्रोमोज, प्रोग्रामिंग, रिपोर्टिंग, दृश्य संकलन, संपादन आदि कार्य हैं। साथ ही दूरदर्शन तथा चैनलों में समाचार लेखन, हिंदी समाचार निवेदक, उद्घोषक, वृत्त संकलक, साक्षात्कार कर्ता, टंकक, संगणक संचालक, सूत्रसंचालक (अँकरिंग) के रूप में रोजगार के कई अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। आकाशवाणी में हिंदी के विभिन्न कार्यक्रमों का संहिता लेखन, हिंदी के विभिन्न कार्यक्रमों का संयोजन और सूत्रसंचालन, नाभोनाट्य, साक्षात्कार–प्रश्नावली का आलेखन, वृत्त संकलन, वृत्त

Scanned by CamScanner

निवेदन, उद्घोषणा के लिए हिंदी के अध्येताओं को नौकरी के मौके मिल रहे हैं। दूरदर्शन तथा रेडियो की आवाज की दुनिया में उद्घोषणएँ, एन्करिंग, कॉम्पेरिंग, वाइस ओवर, डबिंग, ड्रामा वाइस आदि कार्य अहम होते हैं, जिसके लिए हिंदी जानकार की आवश्यकता होती है। फिल्म के क्षेत्र में फिल्म निर्देशक, फिल्म निर्माता, अभिनेता, अभिनेत्री, पटकथाकार, संवाद राइटर, गीत लेखक, संकल्पक और गायक की भी बड़ी माँग हो रही है।

वेब माध्यम :

ऑनलाइन माध्यमों में मल्टिमीडिया का प्रयोग किया जाता है, जिसमें टेक्स्ट, ग्राफिक्स, ध्वनि, संगीत, गतिमान वीडियों, थ्री–डी एनिमेशन, रेडियो ब्राडकास्टिंग, टीवी टेली कास्टिंग का अंतर्भाव होता है। वेब पत्रकारिता की सारी प्रक्रिया ऑनलाइन होती है और पाठकों की प्रतिक्रिया भी। वेब मीडिया की खासियत यह है कि यदि आपके पास संगणक या मोबाइल और इंटरनेट कनेक्शन है तो वह एट–ए–टाइम संपूर्ण संदर्भ पाठकों के सामने उपलब्ध हो सकते हैं। आज वेब माध्यमों की पत्र–पत्रिकाओं के विभिन्न संस्करणों में भी वर्ता संकलक, संवाददाता, सहायक उपसंपादक, उपसंपादक, वरिष्ठ उपसंपादक, समाचार संपादक, निवासी संपादक, कार्यकारी संपादक, संपादक उपलब्ध हो रहे हैं। आज वेब पत्रकारिता के विभिन्न रूप हमारे सामने उभर रहे हैं। आज समय के साथ कई पत्रिकाएँ ऑनलाइन हो गई है। 'जनसंदेश', 'अनुभूति', 'अभिव्यक्ति', 'सृजनगाथा', 'गर्भनाल', 'रचनाकार', 'लेखनी', 'इंद्रधनुष्य इंडिया', 'हिंदी तहलका', 'निरंतर', 'छाया', 'शब्दांजलि', 'हिंदी नेस्ट', 'कलायन' आदि हिंदी पत्रिकाओं ने तमाम रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। चिट्ठा यानी ब्लॉग भी वेब पत्रकारिता का आधुनिक माध्यम माना जाता है। पारंपरिक माध्यमों में संवाद प्राय: एक तरफा और देरी से होता था, मगर चिट्ठों में रपट तत्काल प्रकाशित होती है। अपने विचारों को व्यक्त करने का बेहतरीन माध्यम है–चिट्ठा। यह दो तरफा सूचना आदान–प्रदान का माध्यम है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आने वाला भविष्य वेब माध्यमों का होगा, जिसमें चिट्ठे, ई–पेपर, ई–पत्रिका, वेब पोर्टल, वेब पत्रकारिता के अलग–अलग माध्यमों की मुख्य भूमिका होगी। अत: स्पष्ट है कि वेब माध्यमों में हिंदी के जानकारों के साथ आई. टी. के जानकार, तकनीकीविज्ञ, वेब डिजाइनर, एनिमेशनकार एवं डीटीपी ऑपरेटर के लिए अच्छे दिन आएँगे।

अनुवादक :

दो या दो से अधिक भाषा के जानकारों के लिए अनुवाद का क्षेत्र खुला है। विभिन्न कृतियों का अनुवाद कर बड़े–बड़े पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं। विभिन्न सरकारी कार्यालयों में अनुवादक, विभिन्न बैंकों में अनुवादक तथा विभिन्न अखबारों के कार्यालयों में अनुवाद की आवश्यकता महसूस हो रही है। व्यवसायिक क्षेत्र तथा पर्यटन स्थलों पर भी दुभाषियों की आवश्यकता होती है। दो राष्ट्रों के बीच आपसी संपर्क बनाए रखने के लिए भी दुभाषिया की आवश्यकता होती है। साहित्यिक क्षेत्रों में अच्छी कृतियों का अनुवाद करने के लिए कुशल अनुवादकों की जरूरत होती है। डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. केशव प्रथमवीर जैसे कई अनुवादक इस क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

विभिन्न कार्यालय :

आकाशवाणी, दूरदर्शन, डाक विभाग, रेल विभाग, सेना दल, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, अखिल भरतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, जीवन बीमा योजना, स्टाफ सिलेक्शन समिति, केंद्रीय मंत्रालय का गृह विभाग, केंद्रीय शासन के विभिन्न विभाग, केंद्रीय लोकसेवा संघ, राज्य तथा केंद्रीय हिंदी साहित्य अकादमी, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, विदेशी महाविद्यालय, विदेशी

Scanned by CamScanner

विश्वविद्यालय, मीडिया कार्यालय, विभिन्न व्यावसायिक संस्थान, संगठन तथा कार्यालयों में हिंदी के कुशल जानकारों की आवश्यकता होती है।

ग़ज़लकार :

आज ग़ज़लकार कुछ घंटों के लिए हजारों–लाखों रुपए पारिश्रमिक लेते हैं। वे ग़ज़ल का सृजन भी करते हैं और ग़ज़ल सुनाते भी है।

'किसी के हिस्से में घर आया, किसी के हिस्से में दुकाँ आई।
मैं सबसे छोटा था, मेरे हिस्से में माँ आई।।'

अपने माँ के प्रति समर्पित ग़ज़ल की यह पंक्तियां प्रसिद्ध ग़ज़लकार मुनव्वर राणा की है, जो तीन घंटे के एक कार्यक्रम के लिए एक लाख रुपए पारिश्रमिक लेते हैं। यह है हिंदी की ताकत। आज इस क्षेत्र में राहत इंदौरी, नसीम निखत, नीजा फाजली, अनामिका जैन जैसे ग़ज़लकारों ने अपना नाम कमाया है।

विज्ञापन :

'जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी...' , 'दिल नहीं, बिल छोटा कीजिए...' , 'दिल माँगे मोर रे... ', 'ठंडा मतलब, कोको कोला...' , 'रेड चीफ है तो लेदर ही होगा...' जैसे विज्ञापन २४ घंटे हमारे दिलो–दिमाग पर छा जाते हैं। आज प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, द्रक्–श्राव्य, वेब माध्यमों तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में विज्ञापनकर्ता की नितांत आवश्यकता है।

अन्यान्य रोजगार के अवसर :

आज जिंदादिल शायर हिंदी में शायरी के कार्यक्रमों के द्वारा हजारों रुपए कमाते हैं। प्रकाशन क्षेत्र में हिंदी साहित्य एवं पाठ्य पुस्तकों का सृजन, हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का मुद्रण, प्रकाशन, संपादन, मुद्रित संशोधन, वितरण आदि क्षेत्रों में रोजगार मिलते हैं। आज सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का सूत्रसंचालन करने के लिए अच्छे हिंदी बोलने वालों की जरूरत होती है। इसके अलावा लेखक, कवि, समीक्षक, गीतकार आदि रुप हिंदी भाषा के कुशल जानकारों के लिए उपलब्ध हैं।

'रोजगारोन्मुख हिंदी का वर्तमान परिदृश्य' के विवेचन–विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज हिंदी भाषा के जानकारों एवं अध्येताओं के लिए रोजगार के तमाम अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। आज प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, दूरसंचार, वेब माध्यमों में नए बदलाव के साथ नए–नए रोजगार के पद उपलब्ध हो रहे हैं। ये माध्यम इंटरनेट के आगमन से अद्यतन हो गए हैं। हिंदी भाषा के अध्येता तथा तकनीकी के जानकारों के लिए आने वाले दिनों में रोजगार के कई अवसर और उपलब्ध होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. प्रो. रमेश जैन, जनसंचार कैरियर, सबलाइम पब्लिकेशन्स, १८, जैन भवन, एन. बी. सी. के सामने, शांतिनगर, जयपुर–३०२ ००६, प्रथम संस्करण: २००५
२. डॉ. सुभाष तलेकर, रोजगाराभिमुख हिंदी: दिशाएँ एवं संभावनाएँ, नंदादीप प्रकाशन, ५५८, शनिवार पेठ, कन्याशाला के समीप, न. चिं. केलकर मार्ग, पुणे– ४११ ०३०, द्वितीय संस्करण: २०१०
३. ३ दिल्ली–११० ००२, प्रथम संस्करण: २०००
४. डॉ. अर्जुन तिवारी, जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता, जयभारती प्रकाशन, लालजी मार्केट, माया प्रेस रोड, २५८/३६५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–३, संस्करण: २००४

Scanned by CamScanner